HINDI (हिन्दी)

झारखण्ड (JAC) 2017 (A) बोर्ड परीक्षा में पूछे गये प्रश्न एवं उनके आदर्श उत्तर

Time : 3 Hours] Date of Exam. : 17th Feb. 2017 [Full Marks : 100 [Pass Marks : 33

सामान्य निर्देश :

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपनी ही भाषा-शैली में उत्तर दें।
2. इस प्रश्न पत्र के चार खण्ड हैं यथा **क, ख, ग** एवं **घ**। चारों खण्डों से **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने उपांत में अंकित हैं।
4. प्रश्नों के उत्तर प्रश्नों के साथ दिए गए निर्देश के आलोक में ही लिखें।
5. 1 अंक के प्रश्नों का उत्तर प्रत्येक एक शब्द या एक वाक्य में, 2 अंक के प्रश्नों का उत्तर प्रत्येक लगभग 40 शब्दों में, 3 अंक के प्रश्नों का उत्तर प्रत्येक लगभग 60 शब्दों में, 4 अंक के प्रश्नों का उत्तर प्रत्येक लगभग 80 शब्दों में, 5 अंक के प्रश्नों का उत्तर प्रत्येक लगभग 100 शब्दों में एवं 10 अंक के प्रश्नों का उत्तर प्रत्येक लगभग 200 शब्दों में लिखें।

खण्ड-'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उससे पूछे गए प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

साहस को जिन्दगी सबसे बड़ी जिन्दगी होती है। ऐसी जिन्दगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिन्ता नहीं करता कि उसको देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं? जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रान्ति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं।

साहसी मनुष्य अपने उधार नहीं लेता, वह अपने विचारों में रमा हुआ अपनी ही किताब पढ़ता है। झुंड में चलना और झुंड में चरना, यह भैंस और भेड़ का काम है। सिंह तो बिलकुल अकेला होने पर भी मगन रहता है।

अर्नाल्ड बेनेट ने एक जगह लिखा है कि जो आदमी यह महसूस करता है कि किसी महान निश्चय के समय वह साहस से काम नहीं ले सका, जिन्दगी की चुनौती को कबूल नहीं कर सका, वह सुखी नहीं हो सकता। बड़े मौके पर साहस नहीं दिखानेवाला आदमी बराबर अपनी आत्मा के भीतर एक आवाज सुनता रहता है। एक ऐसी आवाज जिसे वही सुन सकता है और जिसे वह रोक भी नहीं सकता। यह आवाज उसे बराबर कहती रहती है "तुम साहस नहीं दिखा सके, तुम कायर की तरह भाग खड़े हुए।" सांसारिक अर्थ में जिसे हम सुख कहते हैं उसका न मिलना, फिर भी, इससे कहीं श्रेष्ठ है कि मरने के समय हम अपनी आत्मा से यह धिक्कार सुनें कि तुममें हिम्मत की कमी थी कि तुममें साहस का प्रभाव था कि तुम ठीक वक्त पर जिन्दगी से भाग खड़े हुए।

जिन्दगी को ठीक से जीना हमेशा ही जोखिम झेलना है और जो आदमी सकुशल जीने के लिए जोखिम का हर जगह एक घेरा डालता है, वह अंततः अपने ही घरों के बीच कैद हो जाता है और जिन्दगी का कोई मजा उसे नहीं मिल पाता, क्योंकि जोखिम से बचने की कोशिश में, असल में उसने जिन्दगी को ही आने से रोक रखा है।

भोजन का असली स्वाद उसी को मिलता है जो कुछ दिन बिना खाए भी रह सकता है। 'त्यक्तेन भुञ्जीथा' जीवन का भोग त्याग के साथ करो, यह केवल परमार्थ का उपदेश ही नहीं है, क्योंकि संयम से भोग करने पर जीवन से जो आनन्द प्राप्त होता है, वह निरभोगी बनकर भोगने से नहीं मिल पाता।

प्रश्न (क) प्रस्तुत गद्यांश का एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1
(ख) किसे सबसे बड़ी जिन्दगी बताया गया है? 1
(ग) इस जिन्दगी की सबसे बड़ी पहचान क्या है? 1
(घ) साहसी मनुष्य कौन होता है? 1
(ङ) झुण्ड में कौन लोग रहते हैं? 1
(च) अर्नाल्ड बेनेट ने क्या लिखा है? 1
(छ) जिन्दगी को ठीक से जीना क्या है? 1
(ज) भोजन का असली स्वाद किसे मिलता है? 1
(झ) जीवन का भोग किस प्रकार करना चाहिए? 1
(ञ) जिन्दगी का कोई मजा किसे नहीं मिलता है? 1
(ट) 'साहस' का पर्यायवाची शब्द लिखिए। 1
(ठ) 'सांसारिक' शब्द का प्रत्यय अलग कीजिए। 1

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उससे पूछे गए प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

हमारा पर्यावरण हमारा रक्षा कवच है। यह हमें प्रकृति से विरासत में मिला है। यह हम सबका पालनकर्ता और जीवनाधार है। वस्तुतः पर्यावरण रक्षण भारतीय संस्कृति से जुड़ा हुआ है। पेड़-पौधे और जानवर हमारे मित्र हैं। इसलिए बड़े-बड़े बाग-बगीचों और पार्कों को 'शहर का फेफड़ा' कहा जाता है।

हमारी संस्कृति में पेड़ लगाना पुण्य-कार्य माना जाता है। पीपल, बरगद, आम, नीम, जामुन, आँवला जैसे उपयोगी वृक्षों के रोपण को महान धार्मिक कृत्य माना गया है। पेय जल-स्रोतों के निकट मल-मूत्र त्याग को पापकर्म माना गया है।

पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए सबसे अधिक आवश्यकता इस बात की है कि कल-कारखाने से निकलने वाले प्रदूषित जल और कूड़े-कचरे के शुद्धिकरण की व्यवस्था की जाय। सरकारी स्तर पर इस दिशा में अनेक कदम उठाए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त पर्यावरण प्रदूषण को रोकने में हम स्वयं भी सहयोग दे सकते हैं। यह काम हम दो तरह से कर सकते हैं। पहला यह कि हम गंदगी न फैलाएँ और दूसरा यह कि जहाँ गंदगी हो उसे साफ करने में सहयोग दें। अपने आसपास की नालियों को साफ रखें और जहाँ-तहाँ कूड़ा-कचरा आदि न फेंकें। खुले में मल-मूत्र विसर्जित न करें। साथ ही अधिक से अधिक वृक्ष लगाएँ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आधुनिक युग में चारों प्रकार के प्रदूषण भूमि, जल, वायु और ध्वनि-प्रदूषण फैल रहे हैं। भविष्य में इसका दुष्प्रभाव कितना फैलेगा, बताना मुश्किल है। हम जानते हैं कि प्रायः सभी जीवधारियों के लिए प्राणवायु (ऑक्सीजन) आवश्यक है। यदि प्राणवायु दूषित हो जाएगी तो जीवधारियों को जीने के लाले पड़ जायेंगे। हवा के बाद दूसरी आवश्यकता है पानी। पानी भी अब शुद्ध नहीं मिलता है।

आज हमारा मौसम चक्र बहुत कुछ बदल गया है बल्कि अनिश्चित-सा हो गया है। अब कहीं अतिवृष्टि होती है, कहीं अल्पवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि। इस तरह पर्यावरण प्रदूषित होने से प्राकृतिक संतुलन भी बिगड़ता जा रहा है। मौसम में इस तरह के बदलाव से सामान्य जन तो पीड़ित हैं ही, वैज्ञानिक भी चिन्तित हैं।

प्रश्न (क) प्रस्तुत गद्यांश का एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1
(ख) पर्यावरण का हमारे जीवन में क्या संबंध है? 1
(ग) पेड़ लगाने को संस्कृति में क्या माना गया है? 1
(घ) पर्यावरण-प्रदूषण को कैसे रोका जा सकता है? 1
(ङ) प्रदूषण कितने प्रकार का होता है और कौन-कौन? 1
(च) प्राणवायु किसे कहते हैं? प्राणवायु के प्रदूषित होने से क्या समस्या होगी? 1
(छ) मौसम चक्र बदल जाने का क्या परिणाम हो रहा है? 1
(ज) 'शहर का फेफड़ा' किसे कहा जाता है? 1

खण्ड-'ख'

3. दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 200 शब्दों में निबंध लिखें : 10

http://www.jharkhandboard.com

(क) परोपकार (ख) समय का महत्त्व (ग) हमारा राज्य झारखण्ड

4. अपनी वार्षिक परीक्षा की तैयारी का वर्णन करते हुए पिताजी को एक पत्र लिखिए। 5

अथवा, अपने मुहल्ले में पेयजल की नियमित आपूर्ति हेतु नगरपालिका अध्यक्ष को एक अनुरोध पत्र लिखिए।

खण्ड-'ग'

5. **वाक्य में प्रयुक्त क्रिया पदों को छाँट कर लिखिए :**
(क) बादल आकाश में छा गये हैं। 1
(ख) अनुराग अपना सिर खुजला रहा है। 1
(ग) पहरेदार जग रहा है। 1

6. **रिक्त स्थानों की पूर्ति अव्यय पदों से कीजिए :**
(क) मेरा विद्यालय मेरे घर के .... है। 1
(ख) अच्छे चरित्र .... जीवन निरर्थक है। 1
(ग) भारत की सभ्यता .... संस्कृति प्राचीन है। 1

7. **निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :**
(क) संयुक्त वाक्य का एक उदाहरण दीजिए। 1
(ख) परिश्रमी लड़के परीक्षा में सफल होते हैं। (मिश्र वाक्य में बदलें) 1
(ग) मैंने एक व्यक्ति को देखा, जो बहुत गरीब था। (आश्रित उपवाक्य को अलग कीजिए)। 1

8. **निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए :**
(क) मुझसे चला नहीं जाता। (कर्तृवाच्य में बदलें) 1
(ख) मैंने कपड़े धोये हैं। (कर्मवाच्य में बदलें) 1
(ग) पक्षी उड़ते हैं। (भाववाच्य में बदलें) 1

9. (क) 'त्रिभुज' का समास विग्रह करें। 1
(ख) 'पीताम्बर' कौन समास है? 1
(ग) 'पतंग' के दो भिन्न अर्थ लिखिए। 1

खण्ड-'घ'

10. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन
विश्व के निदाघ के सकल जन,
आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन।
तप्त धरा, जल से फिर
शीतल कर दो–
बादल गरजो।

(क) कवि तथा कविता का नाम लिखिए। 1+1=2
(ख) कौन विकल और अनमने थे तथा क्यों? 2
(ग) कवि बादल को गरजने के लिए क्यों कह रहे हैं? 1
(घ) इस पद्यांश में किन-किन शब्दों की पुनरुक्ति हुई है? 1

अथवा,

यश है न वैभव है, मान है न सरमाया;
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया।
प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है,
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।
जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन-
छाया मत छूना मन, होगा दुख दूना।

(क) कवि तथा कविता का नाम लिखिए। 1+1=2
(ख) कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात क्यों कही है? 2
(ग) 'मृगतृष्णा' किसे कहते हैं? 1
(घ) 'हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा' का अर्थ लिखें। 1

11. **निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :** 3×3=9
(क) कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?
(ख) चाँदनी रात की सुन्दरता को कवि देव ने किन-किन रूपों में देखा है?
(ग) बच्चे की मुसकान और एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में क्या अन्तर है?
(घ) 'कन्यादान' कविता में माँ ने बेटी को क्या-क्या सीख दी?

12. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**
(क) पठित पाठ के आधार पर तुलसीदास के भाषा सौंदर्य पर प्रकाश डालिए। 3
(ख) कवि की आँख फागुन की सुन्दरता से क्यों नहीं हट रही है? 2

अथवा,

(क) कवि जयशंकर प्रसाद ने जो सुख का स्वप्न देखा था उसे कविता में किस रूप में अभिव्यक्त किया है? 3
(ख) गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए? 2

13. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

बेटे के क्रिया-कर्म में तूल नहीं किया; पतोहू से ही आग दिलाई उसकी। किन्तु ज्योंही श्राद्ध की अवधि पूरी हो गई, पतोहू के भाई को बुलाकर उसके साथ कर दिया, यह आदेश देते हुए कि इसकी दूसरी शादी कर देना। इधर पतोहू रो-रोकर कहती - मैं चली जाऊँगी तो बुढ़ापे में कौन आपके लिए भोजन बनाएगा, बीमार पड़े तो कौन एक चुल्लू पानी भी देगा? मैं पैर पड़ती हूँ, मुझे अपने चरणों से अलग नहीं कीजिए। लेकिन भगत का निर्णय अटल था। तू जा, नहीं तो मैं ही इस घर को छोड़कर चल दूँगा- यह थी उनकी आखिरी दलील और इस दलील के आगे बेचारी की क्या चलती?

(क) पाठ तथा लेखक का नाम लिखिए। 1+1=2
(ख) सिद्ध करें कि बालगोबिन भगत नर-नारी के अंतर को नहीं मानते थे? 2
(ग) भगत जी की पतोहू भगत जी के साथ क्यों रहना चाहती थी? 1
(घ) आखिरकार भगत जी की पतोहू को ससुराल छोड़कर क्यों जाना पड़ा? 1

अथवा,

काशी संस्कृति की पाठशाला है। शास्त्रों में आनन्द कानन के नाम से प्रतिष्ठित। काशी में कलाधर हनुमान व नृत्य-विश्वनाथ हैं। काशी में बिस्मिल्ला खाँ हैं। काशी में हजारों सालों का इतिहास है जिसमें पंडित कंठे महाराज हैं, विद्याधारी हैं, बड़े रामदास जी हैं, मौजुद्दीन खाँ हैं व 'इन रसिकों से उपकृत होने वाला अपार जन-समूह है। यह एक अलग काशी है जिसकी अलग तहजीब है, अपनी बोली और अपने विशिष्ट लोग हैं। इनके अपने उत्सव हैं, अपना गम। अपना सेहरा-बन्ना और अपना नौहा।

(क) पाठ तथा लेखक का नाम लिखिए। 1+1=2
(ख) काशी को संस्कृति की पाठशाला क्यों कहा गया है? स्पष्ट कीजिए। 2
(ग) 'यह एक अलग काशी है' का आशय स्पष्ट कीजिए। 1
(घ) शास्त्रों में काशी किस नाम से प्रतिष्ठित रही है? 1

14. **निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :** 3×3=9
(क) पठित पाठ के आधार पर फादर कामिल बुल्के की जो छवि उभरती है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।
(ख) वह कौन-सी घटना थी जिसके बारे में सुनने पर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर?
(ग) बिस्मिल्ला खाँ के जीवन से जुड़ी उन घटनाओं और व्यक्तियों का उल्लेख करें जिन्होंने उनकी संगीत साधना को समृद्ध किया।
(घ) किन महत्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई धागे का आविष्कार हुआ होगा?

15. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**
(क) 'लखनवी अंदाज' पाठ का क्या संदेश है? 3
(ख) फादर की उपस्थिति देवदार की छाया जैसी क्यों लगती थी? 2

अथवा,

(क) तब की शिक्षा प्रणाली और अब की शिक्षा प्रणाली में क्या अंतर है? स्पष्ट करें। 2
(ख) वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' किसे कहा जा सकता है? 2

16. जितेन नार्गे ने लेखिका को सिक्किम की भौगोलिक स्थिति एवं जनजीवन के बारे में जो महत्वपूर्ण जानकारियाँ दी, उन्हें लिखिए। 1
अथवा, भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में दुलारी और टुन्नू ने अपना योगदान किस प्रकार दिया?

17. **निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :** 3×2=6
(क) 'माता का आँचल' शीर्षक की उपयुक्तता बताते हुए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।
(ख) 'जॉर्ज पंचम की लाट की नाक को पुनः लगाने के लिए मूर्तिकार ने क्या-क्या यत्न किए?
(ग) गंतोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' क्यों कहा गया?
(घ) लेखक ने अपने आपको हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता कब और किस तरह महसूस किया?

http://www.jharkhandboard.com

उत्तर

खण्ड-'क'

1. देखें JAC-2014A, Q. 1.
2. (क) पर्यावरण और हम।
(ख) पर्यावरण हमारा पालनकर्ता और जीवनाधार है।
(ग) पेड़ लगाने की संस्कृति में पुण्य-कार्य माना गया है।
(घ) कल-कारखाने से निकलने वाले दूषित जल और कूड़े-कचरे का शुद्धिकरण कर, अधिकाधिक वृक्ष लगाकर पर्यावरण प्रदूषण को रोका जा सकता है।
(ङ) प्रदूषण चार प्रकार का होता है -भूमि, जल, वायु और ध्वनि प्रदूषण।
(च) प्राणवायु ऑक्सीजन को कहते हैं। इसके प्रदूषित होने से जीव-जन्तुओं को जीने के लाले पड़ जाएँगे।
(छ) मौसम चक्र बदलने से कहीं, अतिवृष्टि, कहीं अल्पवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि हो रही है।
(ज) शहर में अवस्थित बड़े-बड़े बाग-बगीचों एवं पार्कों को 'शहर का फेफड़ा' कहा जाता है।

खण्ड-'ख'

3. (क) परोपकार

परोपकार का अर्थ–परोपकार दो शब्दों के मेल से बना है-पर + उपकार। इसका अर्थ है-दूसरों की भलाई करना। गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है-'परहित सरिस धर्म नहिं भाई।' अर्थात् परोपकार सबसे बड़ा धर्म है।

परोपकार का महत्त्व–परोपकार एक सामाजिक भावना है। इसी के सहारे हमारा सामाजिक जीवन सुखी और सुरक्षित रहता है। परोपकार की भावना से ही हम अपने मित्रों, साथियों, परिचितों और अपरिचितों की निष्काम सहायता करते हैं।

प्रकृति हमें परोपकार की शिक्षा देती है। सूर्य हमें प्रकाश देता है, चंद्रमा अपनी चाँदनी छिटकाकर शीतलता प्रदान करता है। वायु निरंतर गति से बहती हुई हमें जीवन देती है तथा वर्षा का जल धरती को हरा-भरा बनाकर हमारी खेती को लहलहा देता है। प्रकृति से परोपकार की शिक्षा ग्रहण कर हमें भी परोपकार की भावना को अपनाना चाहिए।

परोपकार से प्राप्त अलौकिक सुख–परोपकार करने से आत्मा को सच्चे आनंद की प्राप्ति होती है। दूसरे का कल्याण करने से परोपकारी की आत्मा विस्तृत हो जाती है। उसे अलौकिक आनंद मिलता है। उसके आनंद की तुलना भौतिक सुखों से नहीं की जा सकी। ईसा मसीह ने एक बार अपने शिष्यों को कहा था-'स्वार्थी बाहरी रूप से भले ही सुखी दिखाई पड़ता है, परंतु उसका मन दुखी और चिंतित रहता है। सच्चा आनंद तो परोपकारियों को प्राप्त होता है।'

परोपकार के विविध रूप और उदाहरण–भारत अपनी परोपकारी परंपरा के लिए जगत-प्रसिद्ध रहा है। भगवान शंकर ने समुद्र-मंथन में मिले विष का पान करके धरती के कष्ट को स्वयं उठा लिया था। महर्षि दधीचि ने राक्षसों के नाश के लिए अपने शरीर की हड्डियाँ तक दान कर दी थीं। आधुनिक काल में दयानंद, तिलक, गाँधी, सुभाष आदि के उदाहरण हमें लोकहित की प्रेरणा देते हैं।

परोपकार में ही जीवन की सार्थकता–परोपकार मनुष्य-जीवन को सार्थक बनाता है। आज तक जितने भी मनुष्य महापुरुष कहलाने योग्य हुए हैं, जिनके चित्र हम अपने घरों पर लगाते हैं, या जिनकी हम पूजा करते हैं, वे सब परोपकारी थे। उनकी इसी परोपकार भावना ने उन्हें ऊँचा बनाया, महान बनाया।

(ख) देखें JAC-2012A, Q. 3. (ग)
(ग) देखें JAC-2015A, Q. 3. (ग)

4. देखें JAC-2013A, Q. 4.

अथवा,

सेवा में,
नगरपालिका अध्यक्ष महोदय
बोकारो स्टील गेट

विषय-पेयजल की नियमित आपूर्ति हेतु।

महाशय,

सविनय निवेदन है कि बोकारो स्टील गेट के निवासी आपसे अनुरोध करते हैं कि हमारी कॉलोनी में पेयजल की नियमित आपूर्ति नहीं हो पा रही है। पानी के अभाव में जनजीवन प्रभावित हो रहा है। बच्चे स्कूल [illegible] रहे हैं। पानी की खोज में इधर-उधर भटकना पड़ रहा है। नगर-निगम कर्मचारियों को सूचित करने पर भी इस बात पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। [illegible] गंभीरता से लेकर [illegible]

अतः आपसे निवेदन है कि इस समस्या को [illegible] पानी आपूर्ति की समुचित व्यवस्था करने की कृपा प्रदान करें।

धन्यवाद

प्रार्थी
बोकारो स्टील गेट निवासी

तिथि :
03-03-2017

खण्ड-'ग'

5. (क) छा गये हैं। (अकर्मक क्रिया)
(ख) खुजला रहा है। (सकर्मक क्रिया)
(ग) जग रहा है। (अकर्मक क्रिया)
6. (क) समीप (ख) के बिना (ग) और।
7. (क) सूर्योदय हुआ और फूल खिल गये।
(ख) जो लड़के परिश्रमी होते हैं वे परीक्षा में सफल होते हैं।
(ग) जो बहुत गरीब था।
8. (क) मैं चल नहीं सकता। (ख) मेरे द्वारा कपड़े धोये गये।
(ग) पक्षी से उड़ा जाता है।
9. (क) तीन भुजाओं का समाहार। (ख) कर्मधारय या बहुव्रीहि।
(ग) सूर्य, एक कीड़ा।

खण्ड-'घ'

10. (क) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, उत्साह।
(ख) विश्व के सभी लोग व्याकुल और अनमने थे क्योंकि वे गर्मी के भीषण ताप से दुःखी थे।
(ग) कवि बादल को क्रांति का प्रतीक मानता है इसलिए वह ओजस्वी स्वर में गरजने के लिए कहता है।
(घ) विकल विकल, उन्मन उन्मन।

अथवा, (क) गिरिजा कुमार माथुर, छाया मत छूना।
(ख) कवि ने कठिन यथार्थ पूजन करने की बात इसलिए कहता है कि कल्पनाओं और छायाओं में मिलने वाला सुख मिथ्या है। यथार्थ में जीना ही जिंदगी की सच्चाई है।
(ग) मृगतृष्णा का अर्थ है सुख का भ्रम पैदा करनेवाली भ्रामक चीजें।
(घ) चाँदनी रात के बाद एक काली रात आती है। पूर्णिमा के बाद अमावस भी आती है, उसी तरह सुख के पीछे दुख भी छिपा रहता है।

11. (क) देखें JAC-2013A, Q. 11. (क)
(ख) कवि ने चाँदनी रात की सुन्दरता को निम्न रूपों में देखा है :
(अ) आकाश में स्फटिक शिलाओं से बने मंदिर के रूप में।
(ब) दही से छलकते समुद्र के रूप में।
(स) दूध की झाग से बने फर्श के रूप में।
(द) स्वच्छ, शुभ्र दर्पण के रूप में।

(ग) बच्चे की मुस्कान सरल, निश्छल, भोली और निष्काम होती है। उसमें कोई स्वार्थ नहीं होता। वह सहज-स्वाभाविक होती है। बड़ों की मुसकान कुटिल, अर्थपूर्ण, सोची समझी, सकाम और सस्वार्थ होता है। वे तभी मुसकाते हैं, जबकि वे सामने वाले में कोई रूचि रखते हों। वे अपनी मुसकान को माप-तोलकर, कोई उद्देश्य पूरा करने के लिए; किसी को महत्त्व देने के लिए घटाते-बढ़ाते हैं। बड़ों की मुसकान उनके मन की स्वाभाविक गति न होकर लोक व्यवहार का अंग होती है।

(घ) देखें JAC-2015A, Q. 11. (घ)

12. (क) तुलसी रससिद्ध कवि हैं। उनकी काव्य-भाषा रस की खान है। रामचरितमानस में उन्होंने अवधी भाषा का प्रयोग किया है। इसमें चौपाई-दोहा शैली को अपनाया गया है। दोनों छंद गेय हैं। तुलसी की प्रत्येक चौपाई संगत के सुरों में ढली हुई जान पड़ती है। उन्होंने संस्कृत शब्दों को विशेष रूप से कोमल और संगीतमय बनाने का प्रयास किया है। भाषा को कोमल बनाने के लिए उन्होंने कठोर वर्णों की जगह कोमल ध्वनियों का प्रयोग किया है। जैसे-'श' की जगह 'स', 'ण' की जगह 'न', 'क्ष' की जगह 'छ', 'य' की जगह 'इ' आदि।

इस काव्यांश में उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, पुनरुक्ति प्रकाश और अनुप्रास आदि अलंकारों का कुशलतापूर्वक प्रयोग हुआ है। कुछ उदाहरण देखिए–

उपमा - लखन उतर आहुति सम।
उत्प्रेक्षा - तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा।

http://www.jharkhandboard.com

रूपक - भानुबंस राकेस कलंकू।

अनुप्रास - न तो येहि काटि कुठार कठोरे।

इस काव्यांश में वीर तथा हास्य रस की भी सुंदर अभिव्यक्ति हुई है। मुहावरों और सूक्तियों के साथ-साथ वक्रोक्तियों का प्रयोग भी मनोरम बन पड़ा है। सूक्ति का एक उदाहरण देखिए-

सेवकु सो जो करै सेवकाई।

वक्रोक्ति - अहो मुनीसु महाभट मानी।

इस प्रकार यह काव्यांश भाषा की दृष्टि से अत्यंत मनोरम है।

(ख) फागुन बहुत मतवाला, मस्त और शोभाशाली है। उसका रूप-सौन्दर्य रंग-बिरंगे फूलों, पत्तों और हवाओं में प्रकट हो रहा है। फागुन के कारण मौसम इतना सुहाना हो गया है कि उस पर से आँख हटाने का मन नहीं करता।

अथवा,

(क) कवि ने स्वप्न में अपनी प्रेमिका को आलिंगन में लेने का सुख देखा था। उसने सपना देखा था कि उसकी प्रेमिका उसकी बाहुओं में है। वे मधुर चाँदनी रात में प्रेम की चुलबुली बातें कर रहे हैं। वे खिलखिला रहे हैं, हँस रहे हैं, मनोविनोद कर रहे हैं। उसकी प्रेमिका के गालों की लाली उषाकालीन लालिमा को भी मात देने वाली है।

(ख) गोपियों के अनुसार, राजा का धर्म यह होना चाहिए कि वह प्रजा को अन्याय से बचाए। उन्हें सताए जाने से रोके।

13. (क) लेखक-रामवृक्ष बेनीपुरी। पाठ-बालगोबिन भगत।

(ख) बालगोबिन भगत नर-नारी के अंतर को महत्त्व नहीं देते थे। हमारे समाज में ऐसा माना जाता है कि मृतक को आग देने का अधिकार पुत्र या किसी नर को है, नारी को नहीं। नारी को तो श्मशान में भी जाने की अनुमति नहीं है। परन्तु बालगोबिन ने इन मान्यताओं को न मानते हुए अपनी पतोहू से चिता को आग दिलवाई। इससे पता चलता है कि उनके मन में नर-नारी का भेद महत्व नहीं रखता।

(ग) भगत जी की पतोहू भगत जी के पास रहकर उनकी सेवा करना चाहती थी। वह उनके लिए भोजन का प्रबंध और बीमारी में सेवा-टहल करना चाहती थी।

(घ) भगतजी की दलील सुनकर उनकी पतोहू को ससुराल छोड़कर जाना पड़ा क्योंकि उन्होंने, कहा कि तू नहीं जाएगी तो मैं घर छोड़कर चला जाऊँगा।

अथवा, (क) पाठ-नौबतखाने में इबादत, **लेखक**-

(ख) काशी संस्कृति की पाठशाला है। यहाँ भारतीय शास्त्रों का ज्ञान है। यह हनुमान और विश्वनाथ की नगरी है। यहाँ का इतिहास बहुत पुराना है। यहाँ धर्मगुरुओं और करुणा-प्रेमियों का वास है।

(ग) काशी अलग है क्योंकि यहाँ की तहजीब बोली, उत्सव, सुख, दुख अलग-अलग है ही साथ ही अपने विशिष्ट लोग भी हैं।

(घ) शास्त्रों में काशी आनंद-कानन नाम से प्रतिष्ठित रही है।

14. (क) फादर कामिल बुल्के एक आत्मीय संन्यासी थे। वे ईसाई पादरी थे। इसलिए हमेशा एक सफेद चोगा धारण करते थे। उनका रंग गोरा था। चेहरे पर सफेद झलक देती हुई भूरी दाढ़ी थी। आँखें नीली थीं। बाँहें हमेशा गले लगाने को आतुर दीखती थीं। उनके मन में अपने प्रियजनों और परिचितों के प्रति असीम स्नेह था। वे सबको स्नेह, सांत्वना, सहारा और करुणा देने में समर्थ थे।

(ख) हुआ यूँ कि लेखिका के आंदोलनकारी व्यवहार से तंग आकर उनके कॉलेज की प्रिंसिपल ने लेखिका के पिता को बुलवाया। पिता पहले-से ही लेखिका के विद्रोही रुख से परेशान रहते थे। उन्हें लगा कि जरूर इस लड़की ने कोई अपमानजनक काम किया होगा। इस कारण उन्हें सिर झुकाना पड़ेगा। इसलिए वे बड़बड़ाते हुए कॉलेज गए।

कॉलेज में जाकर उन्हें पता चला कि उनकी लड़की तो सब लड़कियों की चहेती नेत्री है। सारा कॉलेज उसके इशारों पर चलता है। लड़कियाँ प्रिंसिपल की बात भी नहीं मानतीं, केवल उसी के संकेत पर चलती है। इसलिए प्रिंसिपल के लिए कॉलेज चलाना कठिन हो गया है। यह सुनकर पिता का सीना गर्व से फूल उठा। वे गद्गद् हो गए। उन्होंने प्राचार्य को उत्तर दिया-'ये आंदोलन तो वक्त की पुकार है..... इन्हें कैसे रोका जा सकता है।' लेखिका पिता के मुख से ऐसी प्रशंसा सुनकर विश्वास न कर पाई। उसे अपने कानों पर भरोसा न हुआ। उसे तो यही आशा थी कि उसके पिता उसे डाँटेंगे, धमकाएँगे तथा उसका घर से बाहर निकलना बंद कर देंगे।

(ग) देखें JAC-2015A, Q. 14. (ग)

(घ) अपने तन को ढँकने के लिए, स्वयं को गर्मी, सर्दी और नंगेपन से बचाने के लिए सुई धागे का आविष्कार हुआ होगा। सुई-धागे की खोज से पहले मनुष्य नंगा रहता था। वह जैसे-तैसे वृक्ष की खाल या पत्तों से तन को ढँकता था। किन्तु उससे शरीर की ठीक से रक्षा नहीं हो पाती थी। अतः जब उसने सुई-धागे की खोज कर ली तो उसके हाथ बहुत बड़ी तकनीक लग गई। यह तकनीक कारगर थी कि आज भी हम लोग इसका भरपूर उपयोग करते हैं।

15. (क) देखें JAC-2013A, Q. 15. (क)

(ख) फादर कामिल को गोष्ठी में सबसे बड़े माने जाते थे। वे सबके साथ पारिवारिक रिश्ता बनाकर रखते थे। सबसे बड़ी बात यह थी कि वे सबके घरों में उत्सवों और संस्कारों पर पुरोहित की भाँति उपस्थित रहते थे। हर व्यक्ति उनसे स्नेह और सहारा प्राप्त करता था। वात्सल्य तो उनकी नीली आँखों में तैरता रहता था। इस कारण सबको उनकी उपस्थिति देवदार की छाया के समान प्रतीत होती थी।

अथवा,

(क) तब की शिक्षा-प्रणाली में स्त्रियों को शिक्षा से वंचित किया जाता था। शिक्षा गुरुओं के आश्रमों और मंदिरों में दी जाती थी। कुमारियों को नृत्य, गान, शृंगार आदि की विद्या दी जाती थी। आज की शिक्षा-प्रणाली में नर-नारी-भेद नहीं किया जाता है। लड़कियाँ भी वही विषय पढ़ती हैं, जोकि लड़के पढ़ते हैं। उनकी कक्षाएँ साथ साथ लगती हैं। पहले सहशिक्षा का प्रचलन नहीं था। आज सहशिक्षा में पढ़ना फैशन बन गया है।

(ख) लेखक के अनुसार, वास्तविक सुसंस्कृत व्यक्ति वह है जिसकी बुद्धि और विवेक ने किसी भी नए तथ्य का अनुसंधान और दर्शन किया होगा। जैसे-न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत खोजा। वह वास्तविक रूप से सुसंस्कृत व्यक्ति था।

16. जितेन नार्गे उस वाहन (जीप) का गाइड-कम-ड्राइवर था, जिसके द्वारा लेखिका सिक्किम की यात्रा कर रही थीं। जितेन एक समझदार और मानवीय संवेदनाओं से युक्त व्यक्ति था। उसने लेखिका को सिक्किम की प्रकृति, भौगोलिक स्थिति तथा जन-जीवन के विषय में अनेक महत्वपूर्ण जानकारियाँ दीं। उसने बताया कि सिक्किम बहुत ही खूबसूरत प्रदेश है और गंतोक से यूमथांग की 149 किलोमीटर की यात्रा में हिमालय की गहनतम घाटियाँ और फूलों से लदी वादियाँ देखने को मिलती हैं। सिक्किम प्रदेश चीन की सीमा से सटा है। पहले यहाँ राजशाही थी। अब यह भारत का एक अंग है।

सिक्किम के लोग अधिकतर बौद्ध धर्म को मानते हैं और यदि किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु हो जाए तो उसकी आत्मा की शांति के लिए एक सौ आठ पताकाएँ फहराई जाती हैं। किसी शुभ अवसर पर रंगीन पताकाएँ फहराई जाती हैं। यहाँ लोग बड़े मेहनती हैं वे अपनी पीठ पर बँधी डोको (बड़ी टोकरी) में कई बार अपने बच्चे को भी साथ रखती हैं। यहाँ की स्त्रियाँ चटक रंग के कपड़े पहनना पसंद करती हैं और उनका परंपरागत परिधान 'बोकू' है।

अथवा,

देखें JAC-2015A, Q. 16. का अथवा

17. (क) 'माता का अँचल' शीर्षक पाठ में लेखक ने अपने बचपन की मधुर यादों को याद किया है। माँ की ममता, पिता का स्नेह आदि सब कुछ रहा फिर भी माँ का प्रभाव अंत काल तक संजोये रहता है। अतः इस कहानी का अन्य शीर्षक 'मेरा शैशव' हो सकता है।

(ख) जॉर्ज पंचम की लाट की नाक को लगाने के लिए मूर्तिकार ने अनेक प्रयत्न किए। उसने सबसे पहले उस पत्थर को खोजने का प्रयत्न किया जिससे वह मूर्ति बनी थी। इसके लिए पहले उसने सरकारी फाइलें ढुँढवाईं। फिर भारत के सभी पहाड़ों और पत्थर की खानों का दौरा किया। फिर भारत के सभी महापुरुषों की मूर्तियों का निरीक्षण करने के लिए पूरे देश का दौरा किया। अंत में जीवित व्यक्ति की नाक काटकर जॉर्ज पंचम की मूर्ति पर लगा दी।

(ग) 'मेहनतकश' का अर्थ है-कड़ी मेहनत करने वाले। 'बादशाह' का अर्थ है-मन की मर्जी के मालिक। गंतोक एक पर्वतीय स्थल है। पर्वतीय क्षेत्र होने के नाते यहाँ स्थितियाँ बड़ी कठिन है। अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए लोगों को कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। यहाँ के लोग इस मेहनत से घबराते नहीं और ऐसी कठिनाइयों के बीच भी मस्त रहते हैं। इसलिए गंतोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' कहा गया है।

(घ) देखें JAC-2017A, Q. 16. (घ)

■

http://www.jharkhandboard.com